कथा सरिता

भक्त की भावना

एक पंडित गांव में कथा पढ़ रहे थे। प्रसंग में कृष्ण के ऐश्वर्यमय जीवन का व विलक्षण आभूषणों का वर्णन था। वहाँ सुनने वालों में एक डाकू भी था। कथा समाप्त होने के बाद पंडितजी अन्न, दक्षिणा आदि लेकर जाने लगे, तो डाकू भी उनके पीछे हो लिया। जंगल में किसी को पीछा करते देख पंडित जी तेजी से चलने लगे। डाकू दौड़कर उनके सामने जा पहुँचा और रास्ता रोककर खड़ा हो गया। उसने पंडित जी से पूछा-तुम जिस गोपाल के बारे में बता रहे थे, वह कहाँ रहता है? मैं उसके गहने चाहता हूँ। पंडित जी समझ गए डाकू तो मूर्ख है। उन्होंने कहा-उसका पता तो मेरी पोथी में लिखा है। तुम मेरे साथ पड़ाव तक चलो, मैं वहाँ उजाले में तुम्हें पता बता दूंगा। ऐसा कहकर उन्होंने सामान की गठरी भी उसके सिर पर लाद दी। पड़ाव पर उन्होंने सामान उतरवा लिया व पोथी पढ़ने का नाटक कर डाकू को गोपाल का पता वृंदावन, मथुरा बताकर जाने का रास्ता बता दिया।

डाकू धन्यवाद देकर चला गया और पंडित जी ने चैन की सांस लेते हुए अपनी चतुराई पर खुद को बधाई दी। डाकू वृंदावन पहुँच गया और वहाँ श्रीकृष्ण की तलाश में घूमने लगा। एक शाम यमुना किनारे उसे बाल-गोपाल गैया चराते दिखे। उनकी सुंदरता देख डाकू ठगा सा रह गया। गोपाल ने पूछा क्या चाहते हो? डाकू बोला-मैं अब कुछ नहीं चाहता, बस रोज़ तुम्हें देखना चाहता हूँ। गोपाल ने कहा-मैं तुम्हें रोज़ शाम दर्शन दिया करूंगा, लेकिन तुम्हें ये कुछ गहने ले जाने होंगे। गोपाल के प्रेम में मग्न डाकू का जीवन ही बदल गया। उधर पंडित जी का कथा-पारायण यथेष्ट रूप से चलता रहा।

कहते हैं भगवान भाव ग्रहण करते हैं। उन्हें पाने की इच्छा हो जाने पर विकार आप ही मिट जाता है और वे जीवन को पूर्ण कर देते हैं। यदि उनके प्रति व्याकुलता न हुई, तो सारा जीवन व्रत-कथा पारायण करने पर भी कुछ हासिल नहीं होता।

अनीतिपूर्ण चतुराई विनाशकारी

किसी पहाड़ पर एक बकरी रहती थी। उसके शरीर पर घने नर्म लंबे बाल थे। वह चतुर थी और उसे अपनी बुद्धिमता का बड़ा गुमान था। एक दिन तलहटी में वह घास चर रही थी। कुछ शिकारी पहाड़ के उस क्षेत्र में पहुँचे। उस बकरी पर नज़र पड़ते ही वे उसकी खाल को पाने के लिए लालायित हो उठे। उन्होंने बकरी का पीछा करना शुरु किया। वह बकरी जान बचाकर भागने लगी। बकरी भागते हुए घने जंगल में एक ऐसी जगह पहुँची जहाँ अंगूर की घनी बेलें थी। चतुर बकरी उन बेलों के पीछे जाकर छिप गई। जब पीछा करते शिकारी वहाँ पहुँचे, तो वे बकरी को न देख सके। बड़ी देर तक वहाँ ढूंढ़ने के बाद वे आगे बढ़ गए। बकरी अपनी चतुरता पर बहुत प्रसन्न हुई। तभी उसकी नज़र अंगूर की बेल पर पड़ी, जिसकी आड़ में वह छिपी थी। उसका ध्यान अंगूर के कोमल पत्तों पर गया भी न था। लेकिन अब उसने अंगूर की बेल को ही चरना आरंभ कर दिया। थोड़ी देर में ही उसने सारी बेल चट कर डाली। यह होना भर था कि शिकारी उसे ढूंढ़ते वापस वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने बकरी को देख लिया। थोड़ी देर पीछा करने के बाद ही उन्होंने बकरी का शिकार कर लिया।

शिकारी आपस में कह रहे थे कि यदि बकरी ने वह बेल साफ न की होती तो उसे पकड़ना नामुमकिन ही था। बकरी ने अपना आश्रय नष्ट किया और वह भी शिकार हो गयी। सफलता का अपना नशा होता है। कई बार व्यक्ति कामयाब हो जाने पर आश्रयदाताओं को छोटा समझकर नष्ट करने से नहीं हिचकिचाता। लेकिन जो लोग इस प्रकार की चतुराई लेकर चलते हैं वे जीवन में बड़ा धोखा खाते हैं। ऐसे समय में उसकी सारी समझदारी बेमतलब हो जाती है और फिर पछताने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह जाता। समझदारी वही है जिसमें दीर्घकाल की सोच होती है। सच ही कहा गया है कि अनीतिपूर्ण चतुराई विनाश का कारण बनती है।

जो सीखने को तैयार, सो गुरु

सिक्ख गुरु अमरदास के कई शिष्य थे और कई स्वयं को उनका उत्तराधिकारी बनने के योग्य मानते थे। गुरु ने एक दिन सब शिष्यों को पास बुलाया और कहा-तुम सब एक चबूतरा बनाओ मैं उसे देखूंगा। शिष्यों ने बढ़िया चबूतरे बनाये। एक सुबह गुरु अमरदास ने चबूतरों का मुआयना किया और कहा कि मुझे इनमें से कोई भी पसंद नहीं आया। हर कोई फिर से चबूतरा बनाये। शिष्यों ने फिर से चबूतरे बनाये। गुरु ने उन सारे चबूतरों को तोड़ने का आदेश दिया। कारण बताया कि उन्हें इनमें से कोई भी पसंद नहीं आया। शिष्यों का धैर्य टूटने लगा। वे आपस में कानाफूसी करने लगे कि गुरु बूढ़े होने के कारण ठीक से विचार करने की क्षमता खो बैठे हैं। यह कहकर वे सब निराश हो जाने लगे। गुरु के एक शिष्य चबूतरा बनाने में जुटे रहे। शिष्यों ने उनसे कहा-तुम क्यों चबूतरा बना रहे हो? अनावश्यक आदेश का पालन कर तुम भी क्यों समय खराब कर रहे हो। रामदास ने कहा-भाइयों यदि गुरु ही अनावश्यक आदेश देंगे तो सही बात कौन सोचेगा? अब अगर गुरुदेव सारी उम्र मुझसे चबूतरे बनवाते और तुड़वाते रहे, तो भी मैं उसे अपना कर्त्तव्य समझकर करता रहूँगा। गुरु ने उनसे 70 से अधिक चबूतरे बनवाए और तुड़वा दिये। लेकिन रामदास जी को गुरु की आज्ञा के पालन में तनिक भी प्रमाद नहीं आया। एक दिन गुरु अमरदास आये और रामदास जी को गले लगाकर बोले-तू मेरा सच्चा शिष्य है और गद्दी का वास्तविक अधिकारी है। रामदास जी सिक्ख पंथ के गुरु बने और अपनी सेवाओं से मानव जाति को धन्य किया। पुरानी कहावत है गुरु के आदेश पर विचार नहीं, अमल किया जाता है। गुरुजनों के तर्कहीन लगने वाले आदेश के अत्यंत गहरे अर्थ हो सकते हैं। जो शिष्य इस प्रकार से सीखने के लिए तैयार रहता है, वही गुरु बनने का अधिकारी भी होता है।

बंदर के बलिदान ने दिखाई राह

किसी वन में नदी किनारे मीठे और रसीले आमों का वृक्ष था। आमों का लुत्फ़ उस वृक्ष पर रहने वाले बंदर उठाते थे। बंदरों के समूह का चतुर मुखिया गर्मी की शुरुआत में नदी के ऊपर फैली टहनियों पर लगे बौर नष्ट करवा देता। वह कहता, 'यदि इन टहनियों पर आम लगकर नदी में गिरे तो मानवों तक पहुँच जायेंगे। फिर वे इस वृक्ष के सारे फल ले जायेंगे।' हालांकि, एक साल कुछ बौर रह गये। उनमें आम लगे और वे पानी में गिरे। वे जिन मछुआरों को मिले उनके मुखिया ने कुछ आम राजा को भेंट किये। राजा ने भी इतने रसीले आम पहले कभी नहीं खाये थे। वह पता पूछकर अगले दिन सैनिकों सहित आम तोड़ने जा पहुँचा। तब बंदरों के मुखिया ने बंदरों को वह स्थान छोड़कर नदी के पार सुरक्षित स्थान पर चलने का आदेश दिया। उसने एक लंबी व मजबूत लता पेड़ की टहनी से बांधी और दूसरा सिरा उस पार पेड़ पर बांधने के लिए छलांग लगाई। पेड़ की डाली तो हाथ में आ गई किंतु लता छोटी पड़ गई। तब लता को तानते हुए उसने शेष हिस्से पर अपना शरीर रस्सी की भांति तान लिया। फिर सारे बंदर लता और उसके शरीर पर से होकर पार उतरे। वह लहूलुहान हो गया। अंत में एक दुष्ट बंदर ने जो स्वयं मुखिया बनना चाहता था, उसे ज़ोर से धक्का मारा। वानरराज का हाथ डाली से छूटा और पत्थर पर गिरने से उसकी मृत्यु हो गई। राजा यह सब देख रहा था। बंदरों के मुखिया का ऐसा आत्म बलिदान देख उसने सैनिकों को वहाँ से लौटने का आदेश दिया और कभी भी किसी प्राणी को न सताने की शपथ ली। अच्छाई अंतत: अपना प्रभाव दूसरों पर छोड़ने में कामयाब होती है। यदि जीवन में एक भी बुरा व्यक्ति हमारी अच्छाई को देखकर सुधर जाए तो जीवन सफल मानना चाहिए।

मुम्बई-मीरा रोड। बी.जे.पी.अध्यक्ष नरेन्द्र मेहता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शुभा।

धमतरी-छ.ग.। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सरिता,सेवाकेन्द्र संचालिका। साथ हैं बालाराम साहू,जिला पंचायत अध्यक्ष तथा ब्र.कु. प्राजक्ता।

हथीन-हरियाणा। अमित सिंह,एस.डी.ओ. बिजली निगम को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदेश।

इस्लामपुर। आइ.सी. एम.रहमान को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रतिज्ञा करवाते हुए ब्र.कु. पुष्पा।

जयपुर-राज.। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को रक्षाबंधन के अवसर पर आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. चन्द्रकला। साथ हैं ब्र.कु. सुषमा।

कानपुर। चीफ ज्युडीशियल मजिस्ट्रेट गुलाब सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गिरीजा।

खंडवा। पुलिस अधीक्षक व जज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शक्ति।